“गतिविधियों से विज्ञान की जिज्ञासा”

डॉ ऋतु श्रीवास्तव (स.अ.)
राज्य अध्यापक पुरस्कार 2024
कंपोजिट स्कूल डिलिया
ब्लॉक ..सदर
जनपद ...गाज़ीपुर

1. पूर्व की स्थिति

बच्चो के मानसिक स्तर के अनुसार अधिगम मे असमानता थी, विज्ञान के प्रति अरुचि तथा अभिभावक की उदासीनता एक गम्भीर चुनौती थी। ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि के कारण बच्चों और अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव था।

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य नवाचारी शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना और विद्यालय में उनकी नियमितता शत-प्रतिशत सुनिश्चित करना था।

अभिभावक संपर्क ,बच्चों को प्रतिदिन स्कूल भेजने के लिए प्रेरित

2. क्रियान्वयन

विज्ञान को किताबों से निकालकर प्रयोगों तक लाने के लिए '**कबाड़ से जुगाड़**' (Low-cost teaching aids) मॉडल अपनाया गया। जब बच्चे अपने आसपास की वस्तुओं से विज्ञान के सिद्धांत समझते हैं, तो उनकी जिज्ञासा बढ़ती है। रटने की पद्धति को छोड़कर '**क्यों और कैसे**' पर ध्यान केंद्रित किया गया। विज्ञान मेलों

और छोटी प्रयोगशालाओं के माध्यम से बच्चों को खुद प्रयोग करने के अवसर दिए गए, जिससे उनका आत्मविश्वास और विज्ञान **के प्रति रुचि** बढ़ा।

जनपद स्तरीय राष्ट्रीय आविष्कार विज्ञान प्रदर्शनी

जनपद स्तरीय नेशनल चिल्ड्रन साइंस कांग्रेस प्रतिभागिता

अभिभावकों को जागरूक करने के लिए 'स्कूल चलो' अभियान और चौपालों का आयोजन किया गया। बालिकाओं की शिक्षा के महत्व को समझाते हुए उन्हें प्रतिदिन स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया गया।

बच्चों के द्वारा विभिन्न मॉडल की विद्यालय स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी

इंस्पायर माणक अवार्ड के मॉडल को बनाते हुए बच्चे

इन प्रयासों के परिणामस्वरूप न केवल बच्चों की उपस्थिति में सुधार हुआ, बल्कि विज्ञान के प्रति उनका डर भी कौतूहल में बदल गया। यह परियोजना दर्शाती है कि यदि शिक्षण रोचक हो, तो सामाजिक बाधाएं भी कम होने लगती हैं।

विज्ञान की समझ ...क्यों? और कैसे? कर के सीखा

मैंने गांव में घर-घर जाकर अभिभावकों को पढ़ाई का महत्व और लड़कियों के लिए पढ़ाई क्यों आवश्यक है यह बात पहुंचाने का भरपूर प्रयास किया और उसमें मुझे सफलता भी प्राप्त हुई।

इन चुनौतियों को दूर करने के लिए विद्यालय में **दो प्रमुख नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ** अपनाई गईं:

प्रश्न निर्माण गतिविधि: अध्याय पढ़ाने के बाद प्रत्येक बच्चे को एक पैराग्राफ दिया गया। उन्हें स्वयं 5 प्रश्न और उनके उत्तर तैयार करने का कार्य सौंपा गया। अगले दिन कक्षा में उन्हें अपने साथियों से उन प्रश्नों पर चर्चा करने और पूछने का अवसर दिया गया। बेहतर प्रदर्शन करने वालों को पुरस्कृत किया गया।

गाँव की समस्याओं पर आधारित प्रोजेक्ट: विशेषकर बालिकाओं के लिए एक योजना बनाई गई, जहाँ उन्हें गाँव की वास्तविक समस्याओं (जैसे स्वच्छता, जल प्रबंधन) को पहचानने, डाटा संग्रह करने और उनका वैज्ञानिक समाधान (मॉडल) खोजने के लिए प्रेरित किया गया।

मॉडल निर्माण एवं प्रदर्शनी: बच्चों को वर्किंग मॉडल बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया और विद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें अभिभावकों को भी आमंत्रित किया गया।जब अभिभावकों ने अपने बच्चों द्वारा बनाए गए मॉडल और उनको प्रस्तुत करते हुए वहां देखा तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा और तब उनको शिक्षा का महत्व समझ में आया कि प्रतिदिन बच्चों को स्कूल भेजने से बच्चों का किस प्रकार विकास हुआ है I

3. **प्रभाव**

इन प्रयासों के परिणामस्वरूप विद्यालय के शैक्षणिक वातावरण में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिले:

सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन: बच्चों की उपस्थिति में भारी सुधार हुआ और विज्ञान के प्रति उनकी जिज्ञासा बढ़ी। जिससे अब वे विद्यालय के हर क्रियाकलाप सक्रिय सहभागी बन चुके है।

अभिभावकों में जागरूकता: प्रदर्शनी के माध्यम से जब अभिभावकों ने अपने बच्चों की रचनात्मकता देखी, तो उनका नजरिया बदला और वे स्वयं बच्चों को नियमित स्कूल भेजने लगे।

प्रतिभा का राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन: * विद्यालय की बालिकाओं ने **नेशनल चिल्ड्रेन साइंस कांग्रेस (NCSC)** में भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचकर 'बाल वैज्ञानिक' का खिताब जीता। विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं मे बच्चो की प्रतिभागिता बढी तथा लगातार सफलता भी मिल रही।

वर्ष **2025 INSPIRE MANAK AWARD** में बच्चों ने 'नाली सफाई प्रणाली' का मॉडल पेश किया, जो राज्य स्तर तक चयनित हुआ।

वर्ष 2026 में **बिल्डाथॉन** में 13 और **इंस्पायर अवार्ड्स** में 5 मॉडल प्रस्तुत किए गए। जिसमें एक **बिल्डाथॉन** में और एक **इंस्पायर अवार्ड्स** में चयनित हुआ।

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान विज्ञान क्विज प्रतियोगिता में लगातार 4 वर्षों से बच्चे ब्लॉक स्तर तथा जनपद स्तर तक प्रतिभाग कर रहे हैं। वर्ष 2026 मे एक बालिका NMMS मे चयनित हुई ।

कौशल विकास: बच्चों में नेतृत्व क्षमता, तार्किक सोच, आत्मविश्वास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ।

यह सिद्ध हुआ कि सरल नवाचार और सामुदायिक जुड़ाव से न केवल शिक्षा की गुणवत्ता सुधारी जा सकती है, बल्कि ग्रामीण प्रतिभाओं को राष्ट्रीय पटल पर भी स्थापित किया जा सकता है।

[नेशनल चिल्ड्रन साइंस कांग्रेस में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर बाल वैज्ञानिक बनी]

[राष्ट्रीय आविष्कार विज्ञान मैं पुरस्कृत 2024 और 2025]

उपलब्धि राज्य अध्यापक पुरस्कार प्राप्त करने वाली जिले की छठीं महिला शिक्षिका बनीं डॉ. ऋतु श्रीवास्तव

विज्ञान के क्षेत्र में बच्चों को राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया

प्रथम नियुक्ति वर्ष 2002 में डिलिया विद्यालय पर हुई थी

[इंस्पायर माणक अवार्ड में राज्य स्तरीय प्रदर्शनी में पुरस्कृत]